



yugwarta.com



facebook.com/yugwarta



twitter.com/yugwarta

01-15 मार्च, 2023 ₹100

युगवार्ता

प्राक्षिक



नप गए सिसोदिया



खास दिन के लिए कुछ खास!

कभी कोई दिन, बहुत खास बन जाता है। ऐसे दिन को खास बनाने वाला सिर्फ एक कारण नहीं होता। कई-कई वजहें मिलकर किसी दिन को सबके लिए महत्वपूर्ण बनाती हैं। इस बार आठ मार्च भी रंगों के त्योहार के बीच आया है, यह दिन खास से खासतर बन गया है।

पोंछ कर अंशक अपनी आँखों से मुस्कुराओ तो कोई बात बने।
सर झुकाने से कुछ नहीं होता सर उठाओ तो कोई बात बने।।
- साहिर लुधियानवी

कभी कोई दिन, बहुत खास बन जाता है। ऐसे दिन को खास बनाने वाला सिर्फ एक कारण नहीं होता। कई-कई वजहें मिलकर किसी दिन को सबके लिए महत्वपूर्ण बनाती हैं। इस बार आठ मार्च भी रंगों के त्योहार के बीच आया है, यह दिन खास से खासतर बन गया है। दरअसल वर्ष भर के इंतजार के बाद और बोझिल सर्दियों को झेल लेने के बाद आया है रंगों का त्योहार। भारतीय संस्कृति में पर्व-त्योहार, भोजन, पहनावा

वदना खादर

और संगीत एक साथ गुंथे हुए हैं। इनमें से किसी एक को कम करके, दूसरी को मात्रा बढ़ा देने से सब गड़गड़ हो जाएगा यानी रसिपी गड़गड़ा जाएगी। हमारे पर्व, आयोजनों में भोजन, पहनावे के रंग और संगीत मिलकर त्योहार को संपूर्ण बनाते हैं। बदलते मौसम के अनुरूप अलग भोजन, साज-सज्जा, और लोकगीत मिलकर एक साधारण दिन को उत्सवमयी बना देते हैं। होली मौसम बदलने का पैगाम लेकर आती है। खुशनुमा मौसम हम सबको आने वाले कठोर समय के लिए तैयार भी कर रहा होता है। सर्दियों में जहाँ गर्म भोजन का मंजा उठाया जाता है, होली की शुरुआत ठंडाई, दही भल्ले, चाट, कांजी बड़ा

और कुल्फी से होती है। एक दूसरे को रंग लगाने, गुश्मिया से मुँह मीठा करवाने, गिले-शिकवे भुला आगे बढ़ने के संदेश से होती है। आम-साधारण लोग भी राधा-कृष्ण की होली के रंग में रंग जाने को आतुर रहते हैं। इस दिन फग के गीत गाए जाते हैं। हिन्दी सिनेमा ने भी इस पर्व को खूब भूनाया है। मॉडर्न होते समाज ने फिल्मों से उधार लेकर अपने लोकगीतों पर झुमने का गुर सीख लिया है। इस बार का यह पर्व अपने साथ तीन मौके लाया है। अबोर-मुलाल का और युवाओं के हुड़दंग का पर्व, नमकोंन-मीठे, चटपटे स्वाद के साथ से संपूर्ण होता है। प्रकृति के रंगों की तरह भोजन के अलग-अलग स्वाद, पहनावे के रंग, हमारी सामाजिक सोच की अनेकता से एकता के सूत्र में बांध कर रखते हैं। हमारे घरों में सर्दियों से आज तक चौका-चुल्हा महिलाओं की जिम्मेदारी रहा है। यह विचारणीय मुद्दा है कि एक तरह से 'घर



की मालकिन' होने का दर्जा रखने वालियों के नाम पर [यदि वह स्वयं धनोपार्जन नहीं करती है।] उनका अपना कोई घर नहीं होता। जिस घर के लोगों की देखभाल में गृहणी अपना जीवन लगा देती है, अमूमन वह घर भी उसके नाम पर नहीं होता है। हालात इससे भी बदतर रहे। परिणामस्वरूप जिस समाज में महिला को देवी मान कर पूजा जाता है, उसी समाज में वह कन्या भूषण हत्या, दहेज के दैत्य, और पुरुषों की दरिंदगी का शिकार होती रही। यह सिर्फ भारत में ही नहीं हो रहा था। इस तरह के हालात वैश्विक स्तर पर रहे हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस इसी का परिणाम रहे। फलस्वरूप 'महिला दिवस' मनाने की नीवत आ गई। फिलहाल वह प्रजाति 'संरक्षित श्रेणी' में बेशक नहीं आई है मगर हालात चिंताजनक हो जाएं उससे पहले कमजोर के लिए एक दिन उत्सवमयी बना देने की रीत का दिन मुबारक।

हर दौर के, हर उम्र के संगीत प्रेमी की पसंद के शायर, गीतकार साहिर लुधियानवी के महिलाओं पर

मकबूल शायर ने महिलाओं के हौसले के नाम, उनकी हिम्मत पर या मकबूलियत पर कुछ कहा ही नहीं है। जिस बेटे ने अपनी माँ को अपने ही पिता के हाथों हमेशा बेइज्जत होते देखा, वह ऐसा लिख ही नहीं सका।

लिखे किसी खूबसूरत शेर से इस लेख की शुरुआत करने का मन था। मगर अफसोस कि इस मकबूल शायर ने महिलाओं के हौसले के नाम, उनकी हिम्मत पर या मकबूलियत पर कुछ कहा ही नहीं है। जिस बेटे ने अपनी माँ को अपने ही पिता के हाथों हमेशा बेइज्जत होते देखा, वह ऐसा लिख ही नहीं सका। इसके बावजूद उसके अशआर मन में उतरते चले जाते हैं। संस्कृति, पर्व-त्यौहार, रीति-रिवाजों को जिंदा रखने वालियों के होने से जिस रंगीतस्व में रंगीनियत बनी हुई है, उनके नाम के 'घोषित दिन' का जश्न, और लगता है कि महिलाओं के मन की आवाज को बुलंद करते हुए साहिर ने कहा है- 'ले दे के अपने पास फकत इक नजर तो है, क्यूँ देखें जिंदगी को किसी की नजर से हम' हम सबको यह त्यौहार मुबारक होली, महिला दिवस और संगीत के बेताज बादशाह का जन्मदिन मुबारक।

लेखक 'शुद्धि' और 'कितने मोर्चे' उपन्यास की लेखक हैं।